4. व्यावसायिक योजना सत्र (Occupational Planning Session)—ऐसा समूह उन छात्रों का बनाया जाता है जो अध्ययन के साथ अंशकालीन व्यवसाय की तलाश में होते हैं या अध्ययन समाप्ति के बाद जीविकोपार्जन के लिये किसी व्यवसाय में नियुक्ति के इच्छुक है।

5. समूह चिकित्सा (Group Therapy)—इस प्रकार के समूह में किसी विशेषज्ञ द्वारा समान रोगों से ग्रसित छात्रों के समूह को निर्देश दिया जाता है।

निर्देशन में सामूहिक कार्यविधि की आवश्यकता (NEED OF GROUP PROCEDURES IN GUIDANCE)

निर्देशन में सामूहिक कार्यविधि की आवश्यकता निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट है—

1. समय की बचत—समान समस्या वाले छात्रों के साथ एक समूह में विचार-विमर्श करने से समय की बचत होती है।

2. छात्रों की संख्या में वृद्धि—विद्यालयों में छात्रों की संख्या में हो रही वृद्धि और निर्देशन कार्यकर्ताओं की सीमित संख्या भी सामूहिक कार्यविधि की आवश्यकता प्रकट करती है।

3. व्यक्तिगत परामर्श के लिये पृष्ठभूमि—सामूहिक कार्यविधि व्यक्तिगत परामर्श के लिये पृष्ठभूमि तैयार करने में सहायक होती है। सामूहिक स्थिति में छात्र और परामर्शदाता दोनों एक-दूसरे के स्वभाव से परिचित हो जाते हैं।

4. छात्रों को निसंकोची बनाने में सहायक—सामूहिक कार्यविधि में छात्र जब अपने समान अन्य छात्रों को भी एक-सी समस्या से पीड़ित पाता है तो उसमें मनोबल बढ़ता है और वह निसंकोची और स्पष्टवादी बनकर अपनी समस्या परामर्शदाता के सामने रखता है।

5. व्यक्तिगत विकास में सहायक—इस विधि से छात्रों में सामाजिक दक्षता का विकास होने से उनके व्यक्तित्व के विकास में यह सहायक है।

दृढ़ होता है।

समूह के सदस्यों का चयन
(SELECTION OF MEMBERS OF THE GROUP)

सामूहिक क्रियाओं में भाग लेने वाले छात्रों के चयन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वैसे तो इन क्रियाओं में समस्त छात्रों को सम्मिलित करना आवश्यक है किन्तु कुछ व्यावहारिक एवं प्रशासकीय समस्याओं के कारण ऐसा करना सम्भव नहीं हो पाता है। इस कार्य में सामने आने वाली प्रमुख बाधाएँ उचित सुविधाओं की कमी, नेतृत्व करने वाले कर्मचारियों का अभाव एवं सीमित समय आदि हैं। समूह गठन को अनेक तत्व जैसे–उचित सुविधाओं की उपलब्धता, निर्देशन कर्मचारियों की संख्या, विद्यालय कार्यक्रम में समय निकालना आदि प्रभावित करते हैं। **डाउनिंग** ने समूह के सदस्यों के चयन के लिये निम्नलिखित सुझावों का उल्लेख किया है–

1. **आयु** (Age)—समूह के सदस्य प्राय: समान आयु वर्ग के होने चाहिये। समूह में उच्च कक्षा के छात्रों को भी सम्मिलित करना चाहिये क्योंकि वे समूह के संचालन का उत्तरदायित्व सँभालने में सक्षम होते हैं।

2. **बुद्धि** (Intelligence)—समूह में लाभ उठाने के लिये छात्र में उच्च बौद्धिक क्षमता होनी चाहिये। मन्द बुद्धि बालक समस्या का समाधान होने के स्थान पर उसे और जटिल बना देता है।

3. **परिपक्वता** (Maturity)—समूह के अनुभवों से लाभ उठाने के लिये छात्र में परिपक्वता का होना आवश्यक है।

4. **समय** (Time)—समूह में भाग लेने के लिये छात्र के पास पर्याप्त समय होना आवश्यक है।

5. **एकरूपता**–समूह के सदस्य और उनकी समस्याओं में एकरूपता होनी चाहिये।

समूह का आकार (Size of the Group)—निर्देशन की सामूहिक कार्यविधि में समूह के आकार का महत्त्व अधिक है। समूह का आकार छात्रों की परिपक्वता और विचाराधीन समस्या के रूप पर निर्भर रहता है। डाउनिंग ने समूह के आकार के बारे में बताया है कि तीन सदस्यों का समूह अति लघु होता है और 9 सदस्यों का समूह बड़ा होता है। सामूहिक कार्यविधि के लिये 5 से 7 सदस्यों का समूह उचित आकार का माना जाता है।

निर्देशन की सामूहिक कार्यविधि के लिये समूहों के प्रकार
(KINDS OF GROUPS FOR GROUP PROCEDURES OF GUIDANCE)

निर्देशन की सामूहिक कार्यविधि के लिये समूहों के प्रकार निम्नलिखित रूप में हो सकते हैं–

1. **सूचना प्रदान करने वाला सत्र** (Session of Dissemination of Information)—समूह का यह ऐसा प्रकार है जिसमें छात्रों को शिक्षा का व्यवसाय के बारे में सूचनाएँ देने का कार्य पूरा करके तदनुकूल पाठ्यक्रम चयन के योग्य बनाया जाता है।

2. **पाठ योजना सत्र** (Lesson Planning Session)—इस प्रकार के समूह में सदस्य पाठ्यक्रम और विद्यालय की क्रियाओं की योजना की रूपरेखा तैयार करते हैं।

3. **अग्रिम शिक्षा की योजना बनाने वाला सत्र** (Session of Planning Further Education)—प्राय: कक्षा 12 के छात्र उच्च शिक्षा के प्रकार, उच्च शिक्षा की शिक्षण संस्थाएँ तथा उनमें प्रवेश आदि के बारे में सूचनाएँ प्राप्त करना चाहते हैं। इसीलिये इस कार्य के लिये अलग से समूह बनाया जाता है।

सामूहिक निर्देशन की परिभाषा
(DEFINITION OF GROUP GUIDANCE)

सामूहिक निर्देशन की परिभाषा करते हुये **रॉवर हॉपोक** ने कहा है, **"सामूहिक निर्देशन वह कोई भी सामूहिक क्रिया है जो कुल निर्देशन कार्यक्रम को सुविधा देने या सुधार करने के लिये सम्पन्न की जाती है।"**[1] इसी प्रकार सामूहिक निर्देशन को स्पष्ट करते हुये **जेन वाट्र्स** ने कहा है, **"सामूहिक निर्देशन को साधारणतया इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि यह सामूहिक अनुभवों का व्यक्ति के उत्तम विकास में सहायता देने एवं इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु चेतनापूर्ण प्रयोग है।"**[2] दोनों परिभाषाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि निर्देशन एक व्यगिक्तगत प्रक्रिया है किन्तु सामूहिक निर्देशन भी व्यक्तिगत विकास पर ही विशेष जोर देता है। इस समूह में सम्मिलित सभी सदस्यों के व्यक्तिगत विकास पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसके साथ ही वर्तमान समाज की माँग, कि व्यक्तियों के सामाजिक पक्ष को विकसित किया जाये, की पूर्ति सामूहिक निर्देशन द्वारा ही सम्भव है जबकि इस पक्ष का अध्ययन एवं विकास व्यक्तिगत निर्देशन द्वारा परिपूर्ण नहीं हो पाता है। इस दृष्टि से सामूहिक निर्देशन व्यक्तिगत निर्देशन का सहयोगी है। **लीस्टर डाउनिंग** ने सामूहिक निर्देशन के सम्बन्ध में लिखा है कि—"सामूहिक निर्देशन, निर्देशन सेवा का वह अंग है जो एक कुशल परामर्शदाता के निर्देशन में नवयुवक को अन्यों के साथ विचार-विनिमय एवं अनुभवों में आदान-प्रदान के अवसर प्रदान करता है। यह ऐसा अवसर प्रदान करता है जिनमें अन्तरभूति विकसित होती है, आत्मबोध की सुविधा मिलती है, परिपक्वता में वृद्धि होती है, कार्य करने के लिये तर्कसंगत निर्णय लिया जाता है। इसमें ऐसा वातावरण मिलता है जिसमें मनोचिकित्सा (Therapeutic) के लाभ प्राप्त किये जाते हैं और सामाजिक कुशलता का विकास होता है। सामूहिक निर्देशन का अन्तिम लक्ष्य व्यक्तिगत विकास ही है।" **डाउनिंग** के ये शब्द सामूहिक निर्देशन को पूर्णतया स्पष्ट करते हैं—**"सामूहिक निर्देशन संगठित निर्देशन कार्यक्रम का ही एक अंग है जिसमें क्रियाएँ सम्मिलित की जाती हैं जिनमें अनेक छात्रों का परस्पर मिलन होता है, सूचनाएँ प्राप्त करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान होता है, भविष्य की योजना बनाते हैं और निर्णय लेते हैं।"**[3]